स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड

मानव्य विद्या कला संकाय अंतर्गत विद्यावाचस्पति (पीएच.डी.) हिंदी उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबंध की रूपरेखा

(Ph.D.Synopsis)

“हिंदी के चुनिंदा दलित उपन्यासों में अम्बेडकरवाद”

शोधकर्ता

शिंदे अम्रपाली भगवान

(एम.ए.,बी.एड,सेट,नेट,हिंदी)

शोध-निर्देशक

प्रा.डॉ.बळीराम संभाजी भुक्तरे

एम.ए., पीएच.डी.,नेट,जेआरएफ (हिंदी)

असोसिएट प्रोफेसर

पदवी तथा पदव्युत्तर हिन्दी विभाग,

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर

अनुसंधान केन्द्र

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर

मई 2019

“हिंदी के चुनिंदा दलित उपन्यासों में अम्बेडकरवाद”

प्रस्तावना (Introduction)

साहित्य में समाज एवं मानवीय जीवन को शब्दबद्ध किया जाता है। समाज द्वारा मनुष्य के लिए कुछ नियम बनाए गए हैं, कुछ अच्छे तो कुछ बुरे। फिर भी अब तक उन्हें स्वीकार कर, या उनसे समझौता करते हुए मनुष्य को जीवन बिताना पड़ता रहा है। हम देखते है कि, समाज में कुछ ऐसे लोग हैं, जो अपनी गलती कभी नहीं स्वीकारते बल्कि जो सच होता है, उसी को बदनाम करने का प्रयास करते हैं। जो लोक गलत सामाजिक नियमों और विशिष्ट वर्ग के जुल्मों से डर कर चुपचाप नरक समान जीवन जी रहे थे, कुचले, बेजुबान वर्ग चुपचाप सहन करते रहे। ब्राह्मणवादी विचारों से ग्रस्त सवर्ण मानसिकता से उभरी जातीय व्यवस्था के खिलाफ अम्बेडकरवादी साहित्य आवाज आज उठा रहा है।

साहित्य और समाज एक सिक्के के दो पहलू हैं। जबसे अम्बेडकरवादी साहित्य लेखन की शुरुवात हुई है, तब से किसी-न-किसी रूप में अम्बेडकरवादी साहित्य का चित्रण नजर आता है। वैसे देखा जाए तो कोई भी साहित्यकार समाज को नजर अंदाज नहीं कर सकता क्योंकि वह खुद समाज का एक अभिन्न अंग होता है, इसीलिए हम कहते है कि, साहित्य और समाज के बीच अटूट रिश्ता होता है। भारतीय समाज दो वर्गों में बंटा हुआ है। एक आर्थिक रूप से संपन्न वर्ग और दूसरा आर्थिक विपन्नता में जीनेवाला वर्ग। भारतीय समाज की यह स्थिति स्वतन्त्रतापूर्व समय में ऐसी ही थी और आज भी जैसी की वैसी है, इसमें कोई बदलाव नहीं हुआ है।

यह उँच-नीच की भावना स्वयं डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर जी ने अपने आँखों से देखा है। इसलिए वे पिछड़े वर्ग के समाज के लिए सारा जीवन लड़ते रहे और पिछड़े वर्ग के लोगों को न्याय दिलाने की कोशिश की। वे राष्ट्र को धर्मनिरपेक्ष बनाने के स्वप्न देखते रहे किंतु वह स्वप्न आज तक

साकार नहीं हुआ। आज भी हमारे देश पर कट्टरपंथी, सनातनी, ब्राह्मणवादी, राजनीतिक लोगों का वर्चस्व है। जो अपने धर्म-नियमों को बरकरार रखने तथा दलितों को दास बनाए रखने में जुटे हुए हैं। अम्बेडकरवादी साहित्य समाज का दर्पण है। अम्बेडकरवादी साहित्यकार समाज का दिशादर्शन करते हुए समाज को रास्ता दिखाता है। तथा समाज के सामने आदर्श खड़ा करते है।

शोध विषय को सुचारू और सुनियोजित रूप से अध्ययन करने पर शोध कार्य में सरलता एवं स्तरीयता से संपन्न होता है। अध्ययन की सुविधा और विषय की व्यापकता की दृष्टि से मैंने अपने शोध प्रबंध को निम्नांकित पाँच अध्यायों में विभाजित कर इस विषय का विवेचन एवं विश्लेषण प्रस्तुत कर यह शोध कार्य पूर्ण किया है।

प्रथम अध्याय : हिंदी दलित उपन्यास : एक परिचयात्मक अध्ययन

प्रस्तुत अध्याय में उपन्यास शब्द की व्युत्पत्ति, उपन्यास का अर्थ एवं स्वरूप पर विचार करते हुए उपन्यास की पाशात्य एवं भारतीय विद्वानों द्वारा रचित विविध परिभाषाएँ प्रस्तुत की गई है। उपन्यास के स्वरूप, विवेचन पर विचार करते हुए उसे तीन मुख्य भागों में बाँटा गया है। प्रेमचंद पूर्व युग, प्रेमचंद युग एवं प्रेमचंदोत्तर युग, उपन्यास के तत्त्वों को लेकर विचार विमर्श किया गया है, जिससे उपन्यास के छः तत्वों का महत्त्व स्वीकार किया गया है। कथावस्तु, पात्रों का चरित्र-चित्रण, संवाद योजना, देशकाल तथा वातावरण स्थिति, भाषाशैली एवं उद्देश्य पर विचार करने के बाद यह सिद्ध होता है कि एक के बिना दूसरे की कल्पना ही नहीं की जा सकती। उपन्यासों के प्रकारों में सामाजिक उपन्यास, राजनीतिक उपन्यास, आँचलिक उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास, मनोवैज्ञानिक उपन्यास, समकालीन महिला उपन्यास, दलित एवं अम्बेडकरवादी उपन्यास तथा आदिवासी उपन्यास का विस्तार के साथ विवेचन कया गया है।

दूसरा अध्याय - डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर एवं अम्बेडकरवाद :स्वरूप एवं तत्व

शुरू से ही अम्बेडकरवादी साहित्य में मेरी रुचि रही है। समाज में दलितों को दुय्यम स्थिति को देखकर मेरी आत्मा त्रस्त होती थी। अधिकांश लेखकों ने दलितों के इस दूसरे दर्जे को नकारना चाहा है और उसकी अस्मिता को प्रतिष्ठित करना चाहा है। अम्बेडकरवादी साहित्यकारों की रचना

किसी न किसी अम्बेडकरवादी साहित्य रचना किसी न किसी सत्य को उद्‌घाटित अथवा समस्या की ओर इंगित करती है।

किसी भी साहित्य का केंद्र समाज होता है और समाज का केंद्र मानव होता है। इसलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। उपन्यास साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। जिसमें मानव और उसके जीवन के विभिन्न पक्षों का चित्रण होता है। हिंदी उपन्यास अपने विकास की ओर निरंतर बढ़ रहा है। विकास की नई-नई दिशाओं पर अनेक विद्वान लेखकों ने अनेक गवेषणात्मक उपन्यास लिखे हैं। जिनमें अम्बेडकरवादी उपन्यास लेखन आज की जरुरत है। इसी अम्बेडकरवादी उपन्यास लेखन समाज से प्रेरणा ही नहीं लेता बल्कि सामाजिक संरचना और परिवर्तन में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। अम्बेडकरवादी साहित्य अन्याय, अत्याचार, भेदभाव, असमानता आदि को खत्म करके न्याय, समानता ओर मानवतावाद को विजेता के रूप में देखना चाहता है। हर किसी वस्तु का उद्‌भव और विकास यह एक आम प्रक्रिया है। यह सच है कि, अम्बेडकरवादी साहित्य का उद्‌भव थोडी देर से हुआ है फिर भी बीसवी सदी से लेकर इक्कीसवी सदी में आते-आते अम्बेडकरवादी साहित्य की गति अचानक तेज होती दिखाई देती है।

तीसरा अध्याय -हिंदी के चुनिंदा दलित उपन्यासकारों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

तीसरा अध्याय में हिंदी के प्रमुख दलित उपन्यासकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। जिनमें जयप्रकाश कर्दम (छप्पर, करूणा), मोहनदास नैमिशराय (मुक्तिपर्व, आज बाजार बंद है), सुशीला टाकभौरे (नीला आकाश, तुम्हें बदलनाही होगा), सत्यप्रकाश (जस तस भई सवेर) और रूपनारायन सोनकर (सूअरदान,डंक) आदि है। साहित्यकार के जीवन एवं व्यक्तित्व में कार्यकारण का अटूट संबंध होता है महान साहित्यकार के व्यक्तित्व से उनका कृतित्व प्रभावित होता है। वह उनके द्वारा लिखित कृतियों में व्याप्त रहता है। जीवन कृतित्व का परिचय तब तक पूर्ण नहीं माना जा सकता जब तक लेखक के जीवन के अन्तर्पक्ष, कतिृय मूल प्रेरणा स्त्रोतों और व्यक्तित्व का पूर्ण परिचय नहीं। इसलिए कृतित्व के विवेचन से पूर्व लेखक के जीवन और व्यक्तित्व पर प्रकाश

डालना अनिवार्य है। इसलिए मेरे शोधकार्य के तीसरे अध्याय में अम्बेडकरवादी उपन्यासकार का व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश ड़ाला है।

चौथा अध्याय - हिंदी के चुनिंदा दलित उपन्यासों में अभिव्यक्त अम्बेड़करवाद

अध्याय पाँचवा में अम्बेडकरवादी उपन्यासों में चित्रित दलित समाज के परिवेश को आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं धार्मिक पहलूओं को पर्याय एवं सृष्टि के अनुसार वर्गीकृत किया है। इसमें समान के विघटन के विविध आयाम उभर रहे हैं। दलित समाज की स्थिति अशिक्षा का परिणाम शोषण की विविध परिस्थितियाँ आदि का समग्र वर्णन प्रस्तुत किया है। दलित समाज की मुख्य आर्थिक समस्याओं, वर्ग विभाजन, अछूत समस्या आदि का विस्तृत प्रस्तुतीकरण भी किया है।

सत्यप्रकाश का 'जस तस भई सबेरे' 1998 में प्रकाशित तथा चर्चित उपन्यास है। जिसमें आजादी के बाद एक दलित परिवार का यथार्थ चित्रण हुआ है। नई राजनीतिक व्यवस्था के माध्यम से जिस तरह आज समाज में परिवर्तन लाए जा रहे हैं, उसका दलित जीवन पर किस तरह प्रभाव पड रहा है, इसका सजीव चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। 'डंक' उपन्यास के नायक का नाम विराट है। वह अपनी प्रेमिका संध्या के साथ भारत भ्रमण के लिए निकला है। इन दोनों का भारत भ्रमण पूर्व योजना के अनुसार नहीं है। वे दोनों ऐसे स्थानों पर चले जाते हैं, जहाँ पर अभावग्रस्त जिंदगी, रेतापन और मानव जीवन की विभिन्न समस्याएँ है, वे उनका परिचय पाठकों को कराते है। जयप्रकाश कर्दम द्वारा लिखित 'करूणा' एक लघु-उपन्यास है। बौद्ध दर्शन इसकी प्रमुख विशेषता है। 'नीला आकाश' उपन्यास के द्वारा सुशीला जी ने अम्बेडकर जी के विचारों को व्यक्त किया है और दलित वर्ग में जागृति लाने का प्रयत्न किया है। इस उपन्यास में भीकूजी के माध्यम से इसे चित्रित किया गया है-भीकू जी भीमनगर के प्रबुद्ध लोगों से तथागत गौतम बुद्ध और डॉ.भीमराव अम्बेडकर की चर्चा सुनते रहते हैं। बौद्ध धर्म के सिद्धांत और गौतम बुद्ध की अहिंसा का संदेश, भीकूजी ने समझा है। वे प्राणी हत्या का विरोध करने लगते है। डॉ.अम्बेडकर ने अपने लोगों को बौद्ध धर्म को अपनाने का संदेश देकर अपनी जाति को समता और सम्मान की राह दिखाई है। जयप्रकाश कर्दम जी ने 'छप्पर'

उपन्यास में दलित संवेदना को अभिव्यक्त किया है। जिसमें सुक्खा अपने बेटे को पढ़ा-लिखाकर गुलामगिरी से मुक्ति कर अम्बेडकरवादी विचारधारा को प्रस्तुत करता है।

हिंदी अम्बेडकरवादी उपन्यास साहित्य में पर्यास सृष्टि के रूप में अम्बेडकरवाद के तत्त्व - स्वातंत्र्य, समता, बंधुता, सामाजिक न्याय, शिक्षा, संगठन, संघर्ष, स्वाभिमान, स्त्री प्रतिष्ठा, धर्म चिंतन, शील, निरीश्वरवाद, बौद्धिकता, मानवतावाद आदि का विश्लेषण किया गया है। अम्बेडकर पर्याय सृष्टि में सबसे पहले उस व्यवस्था के प्रति आक्रोश है, उससे मुक्त होने की आकांक्षा और उसके द्वारा निर्दिष्ट व्यवस्था का समाज आज भी अनुसरण कर रहा है और उनका प्रभाव कतिपय अंतर के साथ आज भी बना हुआ है। धर्म एवं दर्शन के प्रति अम्बेडकरवादी दर्शन दृष्टि अत्यंत साफ-सुथरी और पैनी है, जो उसकी अन्यायपूर्ण अनुचित संरचना को देखती, समझती है तथा उसके दुष्प्रभाव के प्रभावितों को मुक्त कराने की सशक्त वैचारिक अभिव्यक्ति देती है।

पाँचवा अध्याय-हिंदी के चुनिंदा अम्बेडकरवादी उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन

'शिल्प' का जन्म तो उस समय ही हो गया था जब मनुष्य के हृदय में निर्माण भावना का जागरण और उसके पश्चात वस्तु विशेष के रूप में उस भावना की अभिव्यक्ति हुई। हिन्दी शब्द-सागर में 'शिल्प' शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया गया है कि, "किसी भी कृति का भाव यदि उसकी आत्मा है तो शिल्प उसका शरीर है।" शिल्प उपन्यास का महत्त्वपूर्ण अंग है। उपन्यास सफल अभिव्यक्ति के लिए शिल्प को अधिक कुशल एवं पूर्ण बनाने का प्रयास करता है और इसलिए उसे अपने शिल्प का विकास करना पड़ता है।

साहित्य लेखन साहित्यकार की एक शैली होती है। किसी भी रचना की सफलता और सार्थकता में शिल्प विधान की अहम भूमिका होती है। यह अम्बेडकरवादी उपन्यास लेखन में भी महत्त्व रखती है। भाषा पक्ष के अंतर्गत अंग्रेजी शब्द, देशज शब्द, मुहावरे एवं कहावते, संवाद योजना में - भावानुरूप संवाद, सहज एवं सरल संवाद, व्यवहारिक संवाद, शैली पक्ष में शैली का स्वरूप, वर्णनात्मक शैली, आत्मकथनात्मक शैली, मनोवैज्ञानिक शैली, प्रतीकात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली आदि पर प्रकाश डाला है।

छटा अध्याय - उपसंहार

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष निम्नांकित है-

1) अम्बेडकरवादी साहित्य जनसाधारण समाज में परिवर्तन की जिज्ञासा पैदा करते हुए उन्हें प्रश्नानुकूल बनाने तथा उसके परिवर्तन-परिणाम से अवगत कराने के लिए दलित रचनाकारों के उद्देश्यों को व्यापक बनाने के लिए आज भी महत्त्वपूर्ण रहा है।

2) डॉ.अम्बेडकर के मूल मंत्र शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो, बुद्ध की प्रज्ञा, करुणा, प्रेम एवं शील सदाचार, नैतिकता की स्थापना करते हुए दलित साहित्य मनुष्य मात्र में आत्मगौरव, सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख समृद्धि के लिए श्रम-स्वेद के सुमनों, सु-मन की मंजुलता बना है।

3) अम्बेडकरवादी साहित्य अम्बेडकरवाद की मानवतावादी दृष्टि को अपनाता है। साथ ही सामाजिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए समसामयिक रहा है।

4) अम्बेडकरवादी साहित्य पुष्पगुच्छ भी है तथा सामाजिक न्याय के आधार पर स्वतंत्रता, समता, बंधुता की संजीवनी से प्रवाहित सदानिरा नदी का जल-जीवन और जीवन जल भी है। यह जल-जल है, तृष्णा है, तृप्ति है, तो जल आग भी है जो निर्माण, रचना, सुजल करता है तो विध्वंस विसर्जन भी करता है। इसी दृष्टि को स्थापित करने के लिए आज भी अम्बेडकरवादी साहित्य समसामायिक है।

5) अम्बेडकरवादी साहित्य यह मनुष्य ने मनुष्य के लिए लिखा, मनुष्य जीवन का लेखा-जोखा है। जिसमें मनुष्य और उस मनुष्य की भावना, संवेदना, दुख दर्द का जिक्र होता है। निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते है कि, हिंदी अम्बेडकरवादी साहित्य पर्याय सृष्टि विकल्प का अनुशीलन करने के उपरान्त हमें अम्बेडकरवादी उपन्यासों में अभिव्यक्त दलित जीवन के जरिए कुछ तथ्य सामने आते हैं जो इस तरह से हैं-

6) दलित, गरीब, मजदूर और आदिवासियों की सेवा एवं उनके हक अधिकार की लड़ाई में अम्बेडकरवादी साहित्य है।

7) पूँजीपति, ब्राह्मणवादी, राजनीतिक लोगों द्वारा भोली-भाली जनता के होनेवाले शोषण और अत्याचार को अम्बेडरकवादी साहित्य सामने लाता है।

अनुसंधान का उद्देश्य (Objectives of the Research)

1) अम्बेडकरवादी साहित्य मानव के विरुद्ध मानव के अध्याय और अत्याचार का बेबाकी से चित्रण करता है। यह चित्रण दलित जीवन की शोषण, पीड़ा, वेदना, संवेदना के धरातल पर समझकर उसे रूपायित करना यह पहला उद्देश्य रहा है।

2) अम्बेडकरवादी साहित्य सभी उपेक्षित और वंचितों की पक्षधरता का साहित्य है। इसका निचोड़ और गहणता से अध्ययन कर उसके प्रति उपाय बताना मेरे शोध कार्य का विषय है।

3) वर्तमान समय में आज सामाजिक मूल्यों का विघटन हो रहा है। अम्बेडकरवादी साहित्य आज महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। पूरे विश्व में अस्पृश्यता, असमानता एवं जातीयता बढ़ रही है। अम्बेडकरवादी साहित्य सामाजिक, राजनीतिक चेतना का आंदोलन है वह ‘जिओ और जीने दो’ का बुलंद नारा है। यही सत्य को प्रकट करना मेरे शोध कार्य का उद्देश्य रहा है।

4) अम्बेडकरवादी साहित्य समता, स्वतंत्रता एवं बंधुता इस मानवतावादी व्यापक अम्बेडकरवादी दर्शन को लेकर आगे बढ़ रहा है। जिसमें मनुष्य को ही सर्वोपरि माना गया है। यह बताना मेरे शोधकार्य का उद्देश्य रहा है।

5) अम्बेडकरवाद में मानवतावादी विचारों के दर्शन होते हैं। जाति-जाति में किया जाने वाला भेदभाव उन्हें पसंद नहीं था। अम्बेडकरवाद यह संदेश देता है कि, सारे मजबूर, असहाय मनुष्य मेरे भाई है। दलितों की कोई अलग जाति नहीं है। सभी मनुष्य मानव है यह बतलाना मेरे अनुसंधान का उद्देश्य रहा है।

6) अम्बेडकरवादी साहित्य दर्शन एवं चिंतन का विषय रहा है। इस साहित्य में गरीबी- अमीरी, उँच-नीच, सुख-दुःख, छुआछूत आदि समस्याओं चित्रण हुआ है। इस चित्रण का पर्दाफाश करना मेरे शोधकार्य का उद्देश्य रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अ) मूल ग्रंथ

ब) आधार ग्रंथ

क) पत्र-पत्रिकाएँ

ख) कोश

ग) इंटरनेट

शोधकर्ती

शिंदे अम्रपाली भगवान
(एम.ए.,बी.एड,सेट,नेट,हिंदी)

शोध-निर्देशक

प्रा.डॉ.बळीराम संभाजी भुक्तरे
(एम.ए.,पीएच.डी.,नेट,जेआरएफ (हिंदी)
सहाय्यक प्राध्यापक
पदवी तथा पदव्युत्तर हिन्दी विभाग,
महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर

❒❒❒